पुणा International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Std-VII Subject-Hindi

PERIODIC ASSESSMENT- 3(2020-21)

(अपठित-विभाग)

प्र-१ अपठित गद्यांश और पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1)संघर्ष के मार्ग में अकेला ही चलना पड़ता है। कोई बाहरी शक्ति आपकी सहायता नहीं करती है। परिश्रम, दृढ़ इच्छा शक्ति व लगन आदि मानवीय गुण व्यक्ति को संघर्ष करने और जीवन में सफलता प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। दो महत्त्वपूर्ण तथ्य स्मरणीय है-प्रत्येक समस्या अपने साथ संघर्ष लेकर आती है। प्रत्येक संघर्ष के गर्भ में विजय निहित रहती है। एक अध्यापक छोड़ने वाले अपने छात्रों को यह संदेश दिया था तुम्हें जीवन में सफल होने के लिए समस्याओं से संघर्ष करने को अभ्यास करना होगा। हम कोई भी कार्य करें, सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने का संकल्प लेकर चलें। सफलता हमें कभी निराश नहीं करेगी। समस्त ग्रंथों और महापुरुषों के अनुभवों को निष्कर्ष यह है कि संघर्ष से डरना अथवा उससे विमुख होना अहितकर है, मानव धर्म के प्रतिकूल है और अपने विकास को अनावश्यक रूप से बाधित करना है। आप जागिए, उठिए दृढ़-संकल्प और उत्साह एवं साहस के साथ संघर्ष रूपी विजय रथ पर चढ़िए और अपने जीवन के विकास की बाधाओं रूपी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कीजिए।

1) मनुष्य को संघर्ष करने और जीवन में सफलता प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं?

उ-परिश्रम, दृढ़ इच्छा शक्ति व लगन

2) प्रत्येक समस्या अपने साथ लेकर आती है?

उ- संघर्ष

3) समस्त ग्रंथों और अनुभवों का निष्कर्ष है?

उ- संघर्ष से डरना या विमुख होना अहितकर है।

4) "मानवीय"शब्द में मूल शब्द और प्रत्यय है?

उ- मानव-ईय

5) संघर्ष रूपी विजय रथ पर चढ़ने के लिए आवश्यक है?

उ- दृढ़ संकल्प, उत्साह एवं साहस

2)कार्य का महत्त्व और उसकी सुंदरता उसके समय पर संपादित किए जाने पर ही है। अत्यंत सुघड़ता से किया हुआ कार्य भी यदि आवश्यकता के पूर्व न पूरा हो सके तो उसका किया जाना निष्फले ही होगा। चिड़ियों द्वारा खेत चुग लिए जाने पर यदि रखवाला उसकी सुरक्षा की व्यवस्था करे तो सर्वत्र उपहास का पात्र ही बनेगा।उसके देर से किए गए उद्यम का कोई मूल्य नहीं होगा। श्रम का गौरव तभी है जब उसका लाभ किसी को मिल सके। इसी कारण यदि बादलों द्वारा बरसाया गया जल कृषक की फ़सल को फलने-फूलने में मदद नहीं कर सकता तो उसका बरसना व्यर्थ ही है। अवसर का सदुपयोग न करने वाले व्यक्ति को इसी कारण पश्चाताप करना पड़ता है।

1) जीवन में समय का महत्त्व क्यों है?

उ- समय पर किया गया काम सफल होता है।

2) खेत का रखवाला उपहास का पात्र क्यों बनता है?

उ- समय पर खेत की रखवाली नहीं करता।

3) बादल का बरसना व्यर्थ है, यदि

उ- फ़सल को लाभ न पहुँचे

4) गद्यांश का मुख्य भाव क्या है?

उ- समय का सदुपयोग

3)यदि फूल नहीं बो सकते तो काँटे कम-से-कम मत बोओ!
है अगम चेतना की घाटी, कमजोर बड़ा मानव का मन
ममता की शीतल छाया में होता। कटुता का स्वयं शमन।
ज्वालाएँ जब घुल जाती हैं, खुल-खुल जाते हैं मूंदे नयन।
होकर निर्मलता में प्रशांत, बहता प्राणों का क्षुब्ध पवन।
संकट में यदि मुसका न सको, भय से कातर हो मत रोओ।
यदि फूल नहीं बो सकते तो काँटे कम-से-कम मत बोओ।

(1) 'फूल बोने' और 'काँटे बोने' का प्रतीकार्थ क्या है? 1

(2) मन किन स्थितियों में अशांत होता है और कैसी स्थितियाँ उसे शांत कर देती हैं?

(3) संकट आ पड़ने पर मनुष्य का व्यवहार कैसा होना चाहिए। और क्यों?

(4) मन में कटुता कैसे आती है और वह कैसे दूर हो जाती है?

(5) काव्यांश से दो मुहावरे चुनकर वाक्य-प्रयोग कीजिए।

उत्तर-

(1) इनका अर्थ है-अच्छे कार्य करना व बुरे कर्म करना।

(2) मन में विरोध की भावना के उदय के कारण अशांति का उदय होता है।माता की शीतल छाया उसे शांत कर देती है।

(3) संकट आ पड़ने पर मनुष्य को भयभीत नहीं होना चाहिए। उसे मन को मजबूत करना चाहिए। उसे मुस्कराना चाहिए।

(4) मन में कटुता तब आती है जब उसे सफलता नहीं मिलती। वह भटकता रहता है। स्नेह से यह दूर हो जाता है।

(5) काँटे बोना-हमें दूसरों के लिए काँटे नहीं बोने चाहिए। घुल जाना-विदेश में गए पुत्र की खोज खबर न मिलने से विक्रम घुल गया है।

(साहित्य-विभाग)

*** बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर**

1) "रहीम के दोहे" का मुख्य अभिप्राय है?
ईश्वर की भक्ति — **नीति की बातें**
वीरता का वर्णन — ईमानदारी की बातें

2) साँचा मीत किसे कहा गया है?
विपत्ति की कसौटी पर खरा उतरनेवाला — **सच बोलनेवाला**
संपत्ति हड़पनेवाला — मिलनेवाला

3) जाल पड़ने पर पानी क्यों बह जाता है?
आगे जाने के लिए
मछलियों से दूरी बनाने के लिए
मछलियों का साथ निभाने के लिए
मछलियों से सच्चा प्रेम न करने के लिए

4) पेड़ अपना फल स्वयं क्यों नहीं खाते हैं?
क्योंकि उसे फल पसंद नहीं हैं।
क्योंकि वे परोपकारी होते हैं।
क्योंकि वह खाना नहीं चाहते
क्योंकि वे फल नहीं खाते।

5) सज्जन संपत्ति क्यों जमा करते हैं?
बुढ़ापे के लिए।
दूसरों की मदद के लिए
धनवान बनने के लिए
अपने बाल-बच्चों के लिए

6) इस कहानी के लेखक का नाम बताएँ
पी० रामास्वामी
टी० सुब्रह्मण्यम
पी० गोपालस्वामी
टी० पद्मनाभन्।

7) काँच के बड़े-बड़े ज़ार कहाँ रखे थे?
दुकान में
अलमारी में
मेज पर
काउंटर पर

8) रामन मल्लिका किसकी हँसी उड़ा रहे थे?
जॉर्ज की
कंचों की
अप्पू की
उपर्युक्त सभी

9) अप्पू के विद्यालय के रास्ते में किसके पेड़ों की घनी छाँव थी?
पीपल के
आम के
नीम के
शीशम के

10) अप्पू का ध्यान किसकी कहानी पर केंद्रित था?
सियार और कौआ की
लोमड़ी और सारस की
लोमड़ी और कौए की
सियार और ऊँट की

11) अप्पू को कंचा आकार में किस प्रकार का लग रहा था?
बाल की तरह
अंगूर की तरह
आँवले की तरह
नींबू की तरह

12) तिनका कहाँ से उड़कर आया था?
पास से
छत से
पैरों के तले से
बहुत दूर से

13) तिनका कहाँ आ गिरा?
कवि के सिर पर
कवि की आँख में
कवि की नाक में
कवि के पैर पर

14) आँख में तिनका जाने पर क्या हुआ?
आँख दुखने लगी
वह दर्द से परेशान हो गया
आँख लाल हो गई
उपर्युक्त सभी

15) कवि पर किसने व्यंग्य किया?
अक्ल ने।
पड़ोसियों ने
सहपाठियों ने
घमंड ने

16) खानपान की संस्कृति में बड़ा बदलाव कब से आया?

पाँच-सात वर्षों में
आठ-दस वर्षों में
दस-पंद्रह वर्षों में
पंद्रह-बीस वर्षों में

17) युवा पीढ़ी इनमें से किसके बारे में बहुत अधिक जानती है?

स्थानीय व्यंजन
नए व्यंजन
खानपान की संस्कृति
इनमें से कोई नहीं।

18) ढाबा संस्कृति कहाँ तक फैल चुकी है?

दक्षिण भारत
उत्तर भारत तक
पूरे देश में
कहीं नहीं।

19) पाव-भाजी किस प्रांत का स्थानीय व्यंजन है?

राजस्थान
महाराष्ट्र
गुजरात
मध्य प्रदेश।

20) किसी स्थान का खान-पान भिन्न क्यों होता है?

मौसम के अनुसार, मिलने वाले खाद्य पदार्थ
रुचि के आधार पर
आसानी से वस्तुओं की उपलब्धता
उपर्युक्त सभी

*** अतिलघु उत्तरीय प्रश्न**

1) जीवन में मित्रों की अधिकता कब होती है?

उत्तर- जब जीवन में काफ़ी धन-दौलत, मान-सम्मान बढ़ जाता है तो मित्रों और शुभचिंतकों की संख्या बढ़ जाती है।

2) "जल को मछलियों से कोई प्रेम नहीं होता" इसका क्या प्रमाण है?

उत्तर- जल को मछलियों से कोई प्रेम नहीं होता। इसका यह प्रमाण है कि मछलियों के जाल में फँसते ही जल उन्हें अकेला छोड़कर आगे बह जाता है।

3) सज्जन और विद्वान के संपत्ति संचय का क्या उद्देश्य होता है?

उत्तर- सज्जन और विद्वान संपत्ति का अर्जन दूसरों की भलाई के लिए करते हैं। उनका धन हमेशा दूसरों की भलाई में खर्च होता है।

4) रहीम ने क्वार मास के बादलों को कैसा बताया है?

उत्तर- रहीम ने क्वार महीने के बादलों को थोथा यानी बेकार गरजने वाला बताया है।

5) अप्पू को दुकान के ज़ारों में रखे कंचे ही क्यों आकर्षित करते हैं, अन्य चीजे क्यों नहीं?

उत्तर- अप्पू को उसके पिता जी सारी चीजे लाकर देते थे, लेकिन कंचे उसने पहली बार देखा था। इसलिए उसका ध्यान केवल कंचों पर जाता है।

6) कंचों को देखकर सबसे पहले अप्पू क्या सोचता है?

उत्तर- कंचों को देखकर अप्पू सोचता है कि पहले ये कंचे दुकान में नहीं थे। शायद दुकानदार ने इन्हें अभी-अभी यहाँ रखा है।

7) कंचे का सबसे अच्छा खिलाड़ी कौन है?

उत्तर- कंचे का सबसे अच्छा खिलाड़ी लड़कों के बीच में जॉर्ज है।

8) कवि छत की मुंडेर पर किस भाव में खड़ा था?

उत्तर- कवि छत की मुंडेर पर घमंड से भरे हुए भाव में खड़ा था।

9) आस-पास के लोगों ने क्या उपहास किया?

उत्तर- आस-पास के लोग कपड़े की नोंक से कवि की आँख में पड़ा तिनका निकालने का प्रयास करने लगे।

10) उत्तर भारत में किस बात में बदलाव आया है?

उत्तर- उत्तर भारत में खान-पान की संस्कृति में बदलाव आया है।

11) आजकल बड़े शहरों में किसका प्रचलन बढ़ गया है?

उत्तर- आजकल बड़े शहरों में फ़ास्ट फूड चाइनीज नूडल्स, बर्गर, पीजा तेज़ी से बढ़ा है।

12) मथुरा-आगरा के कौन-से व्यंजन प्रसिद्ध रहे हैं?

उत्तर- मथुरा के पेड़े और आगरा का दलमोट-पेठा प्रसिद्ध है।

(बाल महाभारत)

प्रश्न-1 राजकुमार उत्तर ने बृहन्नला से क्या कहा?

उत्तर- राजकुमार उत्तर ने बृहन्नला से कहा"बृहन्नला, मुझे बचाओ इस संकट से" मैं तुम्हारा बड़ा उपकार मानूँ गा।"

प्रश्न-2 शंख की ध्वनि को सुनकर द्रोण ने क्या शंका व्यक्त की?

उत्तर- द्रोण ने कहा- "मालूम होता है, यह तो अर्जुन ही आया है।"

प्रश्न-3 दुर्योधन ने पितामह भीष्म को संधि के संबंध में क्या कहा?

उत्तर- दुर्योधन ने कहापूज्य पितामह, " मैं संधि नहीं चाहता हूँ। राज्य तो दूर रहा, मैं तो एक गाँव तक पांडवों को देने के लिए तैयार नहीं हूँ।"

प्रश्न-4 भीष्म ने युधिष्ठिर के संधि प्रस्ताव को सुनकर क्या सलाह दी?

उत्तर - भीष्म ने सलाह दी कि पांडवों को उनका राज्य वापस देना ही न्यायोचित होगा।

प्रश्न-5 "कर्ण"मूर्खता की बातें न करो। हम सबको एक साथ मिलकर अर्जुन का मुकाबला करना होगा।

उत्तर- कृपाचार्य ने कर्ण से कहा ।

प्रश्न-6 राजकुमार उत्तर को अर्जुन से कंक के बारे में क्या मालूम हो चुका था?

उत्तर- राजकुमार उत्तर को अर्जुन से मालूम हो चुका था कि कंक तो असल में युधिष्ठिर ही हैं।

प्रश्न-7 राजकुमार उत्तर के बारे में राजा विराट को क्या भ्रम हुआ?

उत्तर- राजकुमार उत्तर के बारे में राजा विराट को भ्रम हुआ कि विख्यात कौरव-वीरों को उनके बेटे ने अकेले ही लड़कर जीत लिया।

प्रश्न-8 कंक के मुख से खून बहता देखकर राजकुमार उत्तर क्यों चकित रह गया?

उत्तर- कंक के मुख से खून बहता देखकर राजकुमार उत्तर चकित रह गया क्योंकि उसे अर्जुन से मालूम हो चुका था कि कंक तो असल में युधिष्ठिर ही हैं।

*** लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर**

1) तिनके से कवि की क्या हालत हो गई?

उत्तर- एक तिनके ने कवि को बेचैन कर दिया था। वह तड़प उठा। थोड़ी देर में उसकी आँखें लाल हो गईं और दुखने लगीं। कवि की सारी ऐंठ और अहंकार गायब हो गया।

2) तिनकेवाली घटना से कवि को क्या प्रेरणा मिली?

उत्तर- तिनकेवाली घटना से कवि समझ गया कि मनुष्य को कभी घमंड नहीं करना चाहिए। एक तिनके ने हमें बेचैन कर दिया। और हमारी औकात बता दिया, उन्हें यह बात भी समझ में आ गई कि उन्हें परेशान करने के लिए एक तिनका ही काफ़ी है। अतः उसे किसी बात पर घमंड नहीं करना चाहिए।

3) स्थानीय व्यंजनों के प्रसार को प्रश्रय कैसे मिली?

उत्तर- आज़ादी के बाद उद्योग-धंधों, नौकरियों, तबादलों "स्थानांतरण" के कारण लोगों का एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में जाने से मिश्रित व्यंजन संस्कृति का विकास हुआ। उसके कारण भी खानपान की चीजें किसी एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में पहुँची हैं।

4) खानपान संस्कृति का "राष्ट्रीय एकता" में क्या योगदान है?

उत्तर- खानपान संस्कृति का राष्ट्रीय एकता में महत्त्वपूर्ण योगदान है। खाने-पीने के व्यंजनों का प्रभाव एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में बढ़ता जा रहा है। उदाहरण के तौर पर उत्तर भारत के व्यंजन दक्षिण व दक्षिण के व्यंजन उत्तर भारत में अब काफ़ी प्रचलित हैं। इससे लोगों के मेलजोल भी बढ़ता जा रहा है जिससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलता है।

5) कंचे देखकर अप्पू का मन कक्षा में क्यों नहीं लग रहा था?

उत्तर- अप्पू ने जब विद्यालय जाने के समय एक दुकानदार के पास जार में कंचे देख लिए तो उसका दिल और दिमाग कंचों में ही खो गया। वह उसे खरीदने की तरकीब खोजने लगा। उसका ध्यान कक्षा में नहीं था। वह तो कंचों की दुनिया में खोया रहता था। वह सोचता है कि जॉर्ज के आते ही वह कंचे खरीदने जाएगा और उसके साथ खेलेगा।

6) कंचे खरीदने में अप्पू किसकी मदद लेना चाहता है और क्यों?

उत्तर- कंचा खरीदने में अप्पू जॉर्ज की मदद लेना चाहता है। जॉर्ज कंचों के खेल का सबसे अच्छा खिलाड़ी माना जाता है। उसे कोई हरा नहीं पाता। जॉर्ज हारे हुए खिलाड़ी की बंद मुट्ठी के जोड़ों की हड्डी को तोड़ देता है।

7) अप्पू के कंचे सड़क पर कैसे बिखर गए?

उत्तर- दुकानदार ने कागज की पोटली में बाँधकर कंचे उसे दे दिए। जब वह पोटली छाती से लगाए जा रहा था तो उसने देखना चाहा कि क्या सभी कंचों पर लकीरें हैं। बस्ता नीचे रखकर जैसे ही उसने पोटली खोली तो सारे कंचे सड़क पर बिखर गए।

8) वृक्ष और सरोवर किस प्रकार दूसरों की भलाई करते हैं?

उत्तर-वृक्ष और सरोवर अपने द्वारा संचित वस्तु का स्वयं उपयोग नहीं करते हैं, यानी वृक्ष असंख्य फल उत्पन्न करता है लेकिन वह स्वयं उसका उपयोग नहीं करता। वह फल दूसरों के लिए देते हैं। ठीक इसी प्रकार सरोवर भी अपना जल स्वयं न पीकर उसे समाज की भलाई के लिए संचित करता है।

9) रहीम मनुष्य को धरती से क्या सीख देना चाहता है?

उत्तर- रहीम मनुष्य को धरती से सीख देना चाहता है कि जैसे धरती सरदी, गरमी व बरसात सभी ऋतुओं को समान रूप से सहती है, वैसे ही मनुष्य को भी अपने जीवन में सुख-दुख को सहने की क्षमता होनी चाहिए।

*** दीर्घ उत्तर प्रश्न**

1) रहीम के दोहों से हमें क्या सीख मिलती है?

उत्तर-रहीम के दोहों से हमें सीख मिलती है कि हमें अपने मित्र का सुख-दुख में बराबर

साथ देना चाहिए। हमारे मन में परोपकार की भावना होनी चाहिए। जिस प्रकार प्रकृति हमारे लिए सदैव परोपकार करती है, उसी प्रकार हमें दूसरों की मदद करनी चाहिए। रहीम वृक्ष और सरोवर की ही तरह संचित धन को जन कल्याण में खर्च करने की सीख देते हैं। अंतिम दोहे में रहीम हमें सीख देने का प्रयास करते हैं, कि धरती की तरह जीवन में सुख-दुख को समान रूप से सहन करने की शक्ति रखनी चाहिए।

2)कहानी में अप्पू ने बार-बार जॉर्ज को याद किया है? इसका क्या कारण था?

उत्तर-जॉर्ज कंचे का अच्छा खिलाड़ी है। वह अप्पू का सहपाठी था। चाहे कितना भी बड़ा लड़का उसके साथ कंचा खेले, उससे वह हार जाएगा। हारे हुए खिलाड़ी को अपनी बंद मुट्ठी जमीन पर रखनी पड़ती थी। तब जॉर्ज कंचा चलाकर बंद मुट्ठी के जोड़ों की हड्डी तोड़ता है। अप्पू सोचता है कि जॉर्ज के आते ही वह उसे लेकर कंचे खरीदने जाएगा और उसके साथ खेलेगा। अप्पू की इस सोच के पीछे शायद यह कारण था कि जॉर्ज के साथ रहने से उसे हार का सामना नहीं करना पडेगा। इतना ही नहीं, वह सोचता है कि जॉर्ज के साथ रहने पर कक्षा में उसका कोई हँसी नहीं उड़ाएगा। इसके अलावे वह जॉर्ज के अतिरिक्त किसी को खेलने नहीं देगा।

3) इस कविता से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर- इस कविता से यह प्रेरणा मिलती है कि मनुष्य को कभी अहंकार नहीं करना चाहिए। एक तिनका कवि के आँख में जाने। के बाद उनका घमंड चूर-चूर हो गया। अतः अपने उपलब्धि पर अहंकार आ जाना सही नहीं है। हमें सदैव घमंड करने से बचना चाहिए।

4) खानपान की नई संस्कृति का नकारात्मक पहलू क्या है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर-लेखक का कहना है कि मिश्रित संस्कृति से व्यंजन का अलग और वास्तविक स्वाद का मज़ा हम नहीं ले पाते हैं। सब गड्डमड्ड हो जाता है। कई बार खानपान की नवीन मिश्रित संस्कृति में हम कई बार चीजों का सही स्वाद लेने से भी। वंचित रह जाते हैं, क्योंकि हर चीज़ खाने का एक अपना तरीका और उसका अलग स्वाद होता है। प्रायः सहभोज या । पार्टियों में हम विभिन्न तरीके के व्यंजन प्लेट में परोस लेते हैं ऐसे में हम किसी एक व्यंजन का सही मजा नहीं ले पाते। हैं। स्थानीय व्यंजन हमसे दूर होते जा रहे हैं। नई पीढ़ी को इसका ज्ञान नहीं है और पुरानी पीढ़ी भी धीरे-धीरे इसे भुलाती जा रही है। यह खानपान की नवीन संस्कृति के नकारात्मक पक्ष हैं।

(व्याकरण- विभाग)

*** वाक्य**

किसी भी वाक्य को लिखने में प्रयुक्त वर्णों के क्रम को वर्तनी या अक्षरी कहते हैं।
वाक्य भाषा की महत्वपूर्ण इकाई होता है लिखने या बोलने के समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारे द्वारा जो कुछ लिखा या कहा जाए, वह बिल्कुल स्पष्ट सार्थक और व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध हो।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य

हिन्दी के प्रचार में आज-भी बड़े-बड़े संकट हैं।	हिन्दी के प्रचार में आज-भी बड़े-बड़े संकट हैं।
सीता ने गीत की दो-चार लड़ियाँ गायीं।	सीता ने गीत की दो-चार कड़ियाँ गायीं।
पतिव्रता नारी को छूने का उत्साह कौन करेगा।	पतिव्रता नारी को छूने का साहस कौन करेगा।
कृषि हमारी व्यवस्था की रीढ़ है।	कृषि हमारी व्यवस्था का आधार है।
प्रेम करना तलवार की नोक पर चलना है।	प्रेम करना तलवार की धार पर चलना है।
मैं रविवार के दिन तुम्हारे घर आऊँगा।	मैं रविवार को तुम्हारे घर आऊँगा।
कुत्ता रेंकता है।	कुत्ता भौंकता है।
मुझे सफल होने की निराशा है।	मुझे सफल होने की आशा नहीं है।

*** प्रत्यय-**

जो शब्दांश, शब्दों के अंत में जुड़कर अर्थ में परिवर्तन लाये, प्रत्यय कहलाते है।

प्रत्यय	**धातु**	**कृदंत-रूप**
आऊ	टिक	टिकाऊ
आक	तैर	तैराक
आका	लड़	लड़का
आड़ी	खेल	खिलाड़ी
आलू	झगड़	झगड़ालू
इया	बढ़	बढ़िया

प्रत्यय	धातु	कृदंत-रूप
इयल	अड़	अड़ियल
इयल	मर	मरियल
ऐत	लड़	लड़ैत
ऐया	बच	बचैया
ओड़	हँस	हँसोड़
ओड़ा	भाग	भगोड़ा

*** विपरीत लिंग वाले रूप लिखिए।**

१-शिक्षक- शिक्षिका
२-सिंह- सिंहनी
३-देव- देवी
४-युवती- युवक
5-पोती- पोता
६-बाछी- बाछा
७-नर- नारी
८-वृदध-वृदधा
९-दासी- दास
१०-हाथी- हथिनी
११-ठाकुर- ठकुराइन
१२-गायिका- गायक
१३-हंस- हंसिनी
१४-राजकुमार- राजकमारी
१५-घोडा- घोड़ी

* सही विकल्प चुनकर लिखिए।

1- निम्न में से स्त्रीलिंग शब्द है।
क) गगन
ख) आँगन
ग) चूड़ी
घ) चिमटा

2- पुल्लिंग शब्दो का समूह है।
क) सड़क, लता, धरती, मोरनी
ख) बाघ, समुद्र, बुढ़ापा, बालक
ग) दुश्मनी, हँसी, गमहिट, पूर्णता
घ) चिड़िया, मछली, सब्जी, कापी

3- स्त्रीलिंग शब्दों का समूह है।
क) सोना, पालक, महत्व, छाता
ख) ग्रह, नाटक, वृक्ष, शहर
ग) अनन, दिवस, पहाड़, बचपन
घ) खटिया, रोटी, बनावट, शिष्टता

4- निम्न में स पुल्लिग शब्द है।
क) किताब
ख) टिकट
ग) कुर्सी
घ) रात

* रेखांकित शब्दों के लिंग बदलकर वाक्यों को फिर से लिखिए।

1- पापा मुझे बहुत प्यार करते है।
2- शेर ने हिरण का शिकार किया।

3- मामा गौरी के लिए मिठाई लाए।
4- दादाजी पौधो को पानी दे रहे है।
5- शिक्षक स्कूल में पढ़ा रहे हैं।
6- ठाकुर बोलते-बोलते चुप हो गया।

(लेखन-विभाग)

*** अनुच्छेद**

1) रहीम पर अनुच्छेद

अबदुर्ररहीम खानखाना का जन्म संवत् १६१३ ई सन् १५५६ में लाहौर में हुआ था। संयोग से उस समय हुमायूँ, सिकंदर , सूरी का आक्रमण का प्रतिरोध करने के लिए सैन्य के साथ लाहौर में मौजूद थे।रहीम के पिता बैरम खाँ तेरह वर्षीय अकबर के शिक्षक तथा अभिभावक थे। बैरम खाँ खान-ए-खाना की उपाधि से सम्मानित थे। वे हुमायूँ के साढ़ और अंतरंग मित्र थे। रहीम की माँ वर्तमान हरियाणा प्रांत के मेवाती राजपूत जमाल खाँ की सुंदर एवं गुणवती कन्या सुल्ताना बेगम थी। जब रहीम पाँच वर्ष के ही थे, तब गुजरात के पाटण नगर में सन १५६१ में इनके पिता बैरम खाँ की हत्या कर दी गई। रहीम का पालन-पोषण अकबर ने अपने धर्म-पुत्र की तरह किया। शाही खानदान की परंपरानुरूप रहीम को 'मिर्जा खाँ' का ख़िताब दिया गया। रहीम ने बाबा जंबूर की देख-रेख में गहन अध्ययन किया। शिक्षा समाप्त होने पर अकबर ने अपनी धाय की बेटी माहबानो से रहीम का विवाह करा दिया। इसके बाद रहीम ने गुजरात, कुम्भलनेर, उदयपुर आदि युद्धों में विजय प्राप्त की। इस पर अकबर ने अपने समय की सर्वोच्च उपाधि 'मीरअर्ज' से रहीम को विभूषित किया। सन १५८४ में अकबर ने रहीम को खान-ए-खाना की उपाधि से सम्मानित किया। रहीम का देहांत ७१ वर्ष की आयु में सन १६२७ में हुआ। रहीम को उनकी इच्छा के अनुसार दिल्ली में ही उनकी पत्नी के मकबरे के पास ही दफना दिया गया। यह मज़ार आज भी दिल्ली में मौजूद हैं। रहीम ने स्वयं ही अपने जीवनकाल में इसका निर्माण करवाया था।हुमायूँ ने युवराज अकबर की शिक्षा-दिक्षा के लिए बैरम खाँ को चुना और अपने जीवन के अंतिम दिनों में राज्य का प्रबंध की जिम्मेदारी देकर अकबर का अभिभावक नियुक्त किया था। बैरम खाँ ने कुशल नीति से अकबर के राज्य को मजबूत बनाने में पूरा सहयोग दिया। किसी कारणवश बैरम खाँ और अकबर के बीच मतभेद हो गया। अकबर ने बैरम खाँ के विद्रोह को सफलतापूर्वक दबा दिया और अपने उस्ताद की मान एवं लाज रखते हुए उसे हज पर जाने की इच्छा जताई। परिणामस्वरुप बैरम खाँ हज के लिए रवाना हो गये। बैरम खाँ हज के लिए जाते हुए गुजरात के पाटन में ठहरे और पाटन के प्रसिद्ध सहस्रलिंग सरोवर में नौका-विहार के बाद तट पर बैठे थे कि भेंट करने की नियत से एक अफगान सरदार मुबारक खाँ आया और धोखे से बैरम खाँ की हत्या कर दी। यह मुबारक खाँ ने अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए किया।इस घटना ने बैरम खाँ के परिवार को अनाथ बना दिया। इन धोखेबाजों ने सिर्फ कत्ल ही नहीं किया, बल्कि काफी लूटपाट भी मचाया। विधवा सुल्ताना बेगम अपने कुछ सेवकों सहित बचकर अहमदाबाद आ गई। अकबर को घटना के बारे में जैसे ही मालूम हुआ, उन्होंने सुल्ताना बेगम को दरबार वापस आने का संदेश भेज दिया। रास्ते में संदेश पाकर बेगम अकबर के दरबार में आ गई। ऐसे समय में अकबर ने अपने महानता का सबूत देते हुए इनको बड़ी उदारता से शरण दिया और रहीम के लिए कहा इसे सब प्रकार से प्रसन्न रखो। इसे यह पता न चले कि इनके पिता खान खानाँ का साया सर से उठ गया है। बाबा जम्बूर को कहा यह हमारा बेटा है। इसे हमारी दृष्टि के सामने रखा करो। इस प्रकार अकबर ने रहीम का पालन- पोषण एकदम

धर्म- पुत्र की भांति किया। कुछ दिनों के पश्चात अकबर ने विधवा सुल्ताना बेगम से विवाह कर लिया।

2) व्यायाम का महत्व

मानव शरीर एक मशीन की तरह है । जिस तरह एक मशीन को काम में न लाने पर वह ठप पड़ जाती है, उसी तरह यदि शमा जा भी उचित संचालन न किया जाए तो उसमें कई तरह के विकार आने लगते हैं । व्यायाम शरीर के संचालन का एक अच्छा तरीका है । यह शरीर को उचित दशा में रखने में मदद करता है । व्यायाम के लिए अनेक प्रकार की विधियाँ काम में लाई जाती है । कुछ लोग दौड़ लगाते हैं तो कुछ दंड-बैठक करते हैं । बच्चे खेल-कूद कर अपना व्यायाम करते हैं । बुजुर्ग सुबह-शाम तेज चाल से टहलकर अपना व्यायाम करते है । साईकिल चलाना, तैरना, बाग-बगीचों में जाकर उछल-कूद करना आदि व्यायाम की अन्य विधियाँ हैं । नवयुवकों में व्यायामशालाओं में जाकर व्यायाम करने की प्रवृति पाई जाती है । व्यायाम चाहे किसी भी प्रकार का हो, इससे हमें बहुत लाभ होता है । शरीर में ताजगी आती है तथा यह सुगठित बन जाता है । प्रत्येक व्यक्ति को कुछ न कुछ व्यायाम अवश्य करना चाहिए। व्यायाम करने से हमारा रक्त संचार बढ़ जाता है। उससे शरीर पुष्ट बनता है। व्यायाम के पहले हल्की तेल मालिश करने से अधिक लाभ होता है। व्यायाम के एकदम बाद पानी नहीं पीना चाहिये और तुरन्त बाद स्नान भी नहीं करना चाहिये। बन्द कमरे में एवं तंग कपड़ों में व्यायाम नहीं करना चाहिये।स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिषक निवास करता है। अतः जीवन में हर प्रकार की उन्नति के लिये व्यायाम करना जरूरी है।

3) दीवाली पर अनुच्छेद

दीवाली भारत का सबसे महत्त्वपूर्ण त्यौहार माना जाता है । दीवाली शब्द दीपावली का अपभ्रश है, जिसका अर्थ दीपों की पंक्ति होता है । यह त्यौहार कार्तिक मारन के मध्य में अर्थात् कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है । इसी समय जाड़े का प्रारम्भ होने लगता है । हिन्दुओं का मत है कि इस दिन रावण पर विजय प्राप्त करके श्रीरामचन्द्र जी अयोध्या पहुंचे थे । अयोध्यावासियो ने अपने घरों को खूब सजाया और दीपो की पंक्ति से जगमगा कर श्रीरामचन्द्र जी का बड़े आदर और सम्मान से स्वागत किया । इसी याद में हर वर्ष लोग दीवाली का त्यौहार हर्षोल्लास से मनाते हैं । दीवाली की रात लोग अपने-अपने घरों और दुकानो को खूब रोशन करते हैं । साधारण लोग मिट्टी के दीपकों और मोमबत्तियों से तथा बड़े और समृद्ध लोग बिजली के रंगीन बच्चों की झालर से रोशनी करते हैं । तरह-तरह के पटाखे और आतिशबाजी पर बड़ी धनराशि व्यय की जाती है । शाम से ही हर तरफ से पटाखों का शोर सुनाई पड़ने लगता है । सभी लोग नए और अच्छे-अच्छे वस्त्र और परिधान पहने बडी प्रसन्न मुद्रा में दिखाई देते हैं । रात्रि के समय घरों और दुकानो में धन की देवी लक्ष्मी जी का पूजन बड़ी श्रद्धा से किया जाता है । खील-बताशों का इस दिन विशेष महत्त्व होता है । तरह-तरह के पकवान और मिठाइयों का भोग लगाया जाता है और लक्ष्मी जी की आरती उतारी जाती है ।पूजन के बाद घर के लोग प्रसाद के रूप में खील-बताशे तथा मिठाइयाँ खाते हैं । अपने-अपने रिश्तेदारों और मित्रों के घर मिठाई और खील-बताशे भेजे जाते है । दीवाली बड़ा उपयोगी त्यौहार है । दीपावली जैसे त्यौहारों के अवसर पर ही राष्ट्र की सामाजिक और धार्मिक भावना व्यक्त होती हैं ।

(सूचना-पत्र)

1)आपके विद्यालय के वार्षिक उत्सव में नाटक मंचन हेतु इच्छुक छात्रों को जानकारी देने हेतु एक सूचना तैयार कीजिए।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल
सूचना
नाटक मंचन का आयोजन

दिनांक :24/08/2017

इस विद्यालय के सभी छात्रों को सूचित किया जाता है कि विद्यालय के वार्षिक उत्सव में नाटक मंचन किया जाएगा। जो भी छात्र नाटक में अभिनय करने के इच्छुक हों, वे 03 सितंबर 2017 को अंतिम दो कालांश में स्क्रीन टेस्ट हेतु क्रिया-कलाप कक्ष में उपस्थित रहें।

राकेश कुमार
छात्र सचिव

2) आप शांति विद्या निकेतन, प्रशांत विहार, दिल्ली की छात्रा ख़ुशी मेहरा हैं। विद्यालय में आपका परीक्षा प्रवेश-पत्र गुम हो गया है। इस विषय पर 20-से-30 शब्दों में सूचना लिखे।

सूचना
शांति विद्या निकेतन, प्रशांत विहार, दिल्ली
दिनांक - 24/07/2019
परीक्षा प्रवेश-पत्र गुम हो जाना

सभी को यह सूचित किया जाता है कि 22/07/2019 को विद्यालय के खेल परिसर में मेरा परीक्षा प्रवेश-पत्र गुम हो गया है। इस पर मेरी फोटो के साथ मेरा अनुक्रमांक 2367528 है। यदि यह किसी को भी मिले तो मुझे लौटाने की कृपा करें।

ख़ुशी मेहरा
कक्षा- छ